सिन्धु घाटी की सभ्यता का शेष जारी है-

(८) आभूषण

उत्खनन में अनेक आभूषण प्राप्त हुये हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि ये लोग आभूषण-प्रिय थे। धनी-निर्धन सभी श्रेणियों के लोग आभूषण पहनते थे। आभूषणों का प्रयोग स्त्री-पुरुष दोनों ही करते थे। धनी लोग सोने, चाँदी, जवाहरात तथा मणि के आभूषण प्रयोग में लाते थे। निर्धन लोग हड्डियों तथा पक्की मिट्टी के बने हुये आभूषण पहनते थे।

(९) आमोद-प्रमोद

यहाँ के निवासियों का मनोरंजन अनेक प्रकार से होता था। शतरंज खेलना, आखेट करना, मुर्गों की लड़ाई देखना और नाच-गाना इन लोगों के आमोद-प्रमोद के साधन थे। जुआ भी इन लोगों का मनोरंजन था। बच्चे खिलौनों से खेलते थे।

(१०) शव-विसर्जन

यहाँ के निवासी मृत व्यक्तियों की अन्तिम क्रिया तीन प्रकार से करते थे। कुछ लोग शव को गाड़ देते थे। कभी-कभी शव को पशु पक्षी के सामने डाल देते थे जो कुछ बच जाता था उसे गाड़ देते थे। कभी-कभी शव को जलाने के उपरान्त क्षार को पृथ्वी में गाड़ देते थे। अधिकतर लोगों में तीसरी प्रकार से अन्तिम संस्कार करने की प्रथा थी। हरप्पा में एक कब्रिस्तान का भी पता लगा है।

आर्थिक जीवन

सिन्धु घाटी के लोगों का आर्थिक जीवन अत्यन्त समृद्धिपूर्ण और विकसित था। अपने समय की अन्य सभ्यताओं के मुकाबले में सिन्धु घाटी की सभ्यता आर्थिक तथा व्यापारिक समृद्धि में कहीं आगे थी।

(१) कृषि-कर्म

सिन्धु घाटी के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि कर्म था। यह अच्छी तरह नहीं ज्ञात है कि वे लोग हल का प्रयोग करते थे अथवा नहीं। गेहूँ और जौ उन लोगों की प्रमुख उपज थी। वे लोग कपास और खजूर की खेती करते थे।

(२) पशु पालन

कृषि-कर्म के साथ-साथ वे लोग पशु-पालन भी करते थे। इनके बर्तनों और मुहरों पर अंकित पशुओं के चित्रों से मालूम होता है कि ये लोग बैल, सुअर, भेड़, कुत्ते और गाय पालते थे। ये लोग पशुओं को मार कर उनका माँस भी खाते थे।

(३) व्यापार

सिन्धु घाटी के निवासियों की व्यापार की अवस्था बहुत उन्नत थी। वे लोग संसार के अन्य देशों से काफी बड़े पैमाने पर व्यापार करते थे। समाज में व्यापारियों का स्थान सम्मानित था। मोहन जोदड़ो में सुसंगठित तथा समृद्धिशाली व्यापारियों की बस्ती थी। वे लोग सुमेर आदि राज्यों से वस्तुओं का आयात-निर्यात करते थे। मोहनजोदड़ो के निवासी अपने खाने के लिए सुमेर से मछली मँगाया करते थे।

(४) वस्त्रोद्योग

यहाँ के लोग वस्त्रोद्योग में भी उन्नतिशील थे। वे रुई से कपड़े बनाते थे। ऊनी, सूती कपड़ों का व्यवसाय काफी उन्नति पर था। वस्त्रों को, सुन्दर तथा आकर्षक रंगों से रंगते भी थे। उत्खनन द्वारा प्राप्त वस्तुएँ प्रमाणित करती हैं कि उस समय के लोगों को सिलाई का भी ज्ञान था।

(५) आभूषण कला

यहाँ के निवासी आभूषण बनाने में निपुण थे; सोने-चाँदी के कड़े, कानों के आभूषण; निकलिस तथा अन्य गहने इतने उत्तम और चमकीले हैं कि प्रसिद्ध विद्वान मार्शल की सम्मत्ति में वे, "वान्ड स्ट्रीट" के किसी आधुनिक जौहरी की दूकान से आए हुए प्रतीत होते हैं। ईसा से ५००० वर्ष के किसी प्रागैतिहासिक-कालीन घर से नहीं।"

(६) अन्य उद्योग

लोग अनेक प्रकार की घरेलू वस्तुएँ भी बनाना जानते थे। यहाँ के लोग मिट्टी के बर्तन तैयार करते थे। उत्खनन में कटोरियाँ, तश्तरियाँ, प्याले मटके, कलश इत्यादि बहुत बड़ी संख्या में प्राप्त हुये हैं। ये बर्तन अधिकतर सादे हैं किन्तु बर्तनों पर आकर्षक ढङ्ग से चित्रांकन भी किया गया था। सिन्धु घाटी की सभ्यता में मिट्टी की वस्तुएँ तैयार करने की कला काफी उन्नति पर पहुँच चुकी थी। बढ़ई काठ की सुन्दर वस्तुयें तैयार करते थे।

(७) कला

सिन्धु घाटी की वास्तुकला में हमें सौन्दर्य भावना अपेक्षाकृत कम और उपयोगिता की भावना अधिक दिखाई पड़ती है। सिन्धु घाटी की मूर्तिकला उच्चकोटि की है। यद्यपि मूर्तियाँ थोड़ी संख्या में ही प्राप्त हुई हैं तथापि सभी सुन्दर और कला-पूर्ण हैं। सिन्धु घाटी की मूर्तियों में चित्त पर प्रभाव डालने की अद्भुत क्षमता है। मुहरों और खिलौनों पर अंकित पशु-आकृतियाँ अत्यन्त आकर्षक हैं। पशु की आकृतियों के अंकन में सिन्धु घाटी के कलाकार सबसे अग्रगण्य थे। सिन्धु घाटी की सभ्यता पर प्रो० मार्शल अपनी सम्मति देते हैं, "सिन्धु घाटी की कला और धर्म भी उतने ही विचित्र हैं और उन पर अपनी एक विशिष्ट छाप है। इस कला में हम अन्य देशों की कोई ऐसी वस्तु नहीं जानते जो शैली की दृष्टि से यहाँ की चीनी मिट्टी की बनी भेड़ों, कुत्तों या अन्य पशुओं की मूर्तियों से मिलती हों या उन खुदी हुई मुहरों से, विशेष रूप से, जिन पर छोटी सींगों वाले बैलों की नक्काशी है और जो निर्माण, कौशल और सुडौलपन की दृष्टि से अद्वितीय हैं।"

(८) लेखन-कला

सिन्धु घाटी के निवासी एक चित्रात्मक लिपि से परिचित थे। लगभग ५०० मुहरें प्राप्त हुई हैं। जिन पर लिखी हुई लिपि कोई भी विद्वान अभी तक नहीं पढ़ पाया है। ये दाहिने से बाँये को लिखते थे पर कुछ विद्वानों का मत है कि वह वही लिपि है जिसका प्रयोग एलम, मिस्र, सुमेर आदि पश्चिमी एशिया के देशों में होता था।

धार्मिक जीवन

सिन्धु घाटी की सभ्यता के धार्मिक जीवन के विषय में प्राचीन प्रमाण यथेष्ठ